Dr. RANJEET KUMAR

Dept. of History

H.D.Jain College, Ara.

B. A. ,Semester - Unit- 4,(MJC-6)

बर्लिन कांग्रेस (13 जून – 13 जुलाई 1878)

परिचय और पृष्ठभूमि

1878 में यूरोप की सबसे महत्वपूर्ण राजनयिक बैठकें में से एक बर्लिन कांग्रेस का आयोजन हुआ। यह बैठक 13 जून से 13 जुलाई 1878 तक बर्लिन (तब की जर्मन साम्राज्य की राजधानी) में आयोजित की गई थी। इसमें यूरोप की प्रमुख महाशक्तियाँ और ओटोमन साम्राज्य (तुरानी साम्राज्य) शामिल थे।

बर्लिन कांग्रेस मूल रूप से रूस-तुर्की युद्ध (1877-78) के बाद पैदा हुई स्थितियों को सुलझाने के लिए बुलायी गई थी। 1877-78 के युद्ध के अंत में सान-स्टीफानो की संधि (Treaty of San Stefano) पर 3 मार्च 1878 को रूस और तुर्की के बीच एक समझौता हुआ, जिसमें रूस को बहुत लाभ मिला और ओटोमन साम्राज्य को भारी नुकसान। लेकिन यह संधि यूरोप के अन्य शक्तियों को स्वीकार्य नहीं थी, खासकर ब्रिटेन और ऑस्ट्रिया-हंगरी को।

'पूर्वी प्रश्न' (Eastern Question)

19वीं सदी में यूरोप में "पूर्वी प्रश्न" सबसे बड़ी विदेश नीति समस्या बन गया था। इसका मूल कारण ओटोमन साम्राज्य की कमजोरी और उसके यूरोपीय हिस्सों में विद्रोह, अलगाव और बाहरी हस्तक्षेप की बढ़ती घटनाएँ थीं। रूस का लक्ष्य था कि वह ओटोमन साम्राज्य से अधिक से अधिक भूमि और प्रभुत्व प्राप्त करे और काले सागर से भूमध्य सागर तक पहुंच बनाए। वहीं ब्रिटेन, फ्रांस और ऑस्ट्रिया-हंगरी इस संभावित विस्तार को रोकना चाहते थे ताकि रूस की शक्ति नियंत्रित रहे और यूरोप में संतुलन बना रहे।

सान-स्टीफानो संधि और यूरोप में असंतोष

सान-स्टीफानो की संधि के अनुसार रूस ने बाल्कन क्षेत्र में एक विशाल "大 बुल्गारिया" (Greater Bulgaria) राज्य बनाने की योजना बनाई थी, जो तुर्की साम्राज्य के नाम मात्र के अधीन होगा लेकिन वास्तव में रूस के नियंत्रण में रहेगा। इससे रूस को दक्षिण-पूर्वी यूरोप में अत्यधिक प्रभाव मिलता, जो ब्रिटेन, ऑस्ट्रिया-हंगरी जैसे देशों के हितों के खिलाफ था।

ब्रिटेन को यह डर था कि रूस काला सागर से भूमध्य सागर के मार्गों पर नियंत्रण पाने के लिए आगे बढ़ सकता है, जिससे ब्रिटेन की समुद्री शक्ति और व्यापार प्रभावित होगा। इसी कारण ब्रिटिश प्रधानमंत्री बेंजामिन डिजरायली ने रूस के विस्तार को रोकने के लिए कड़ा विरोध किया।

बर्लिन कांग्रेस बुलाने के कारण

सान-स्टीफानो संधि के विरोध और बढ़ते तनाव को देखते हुए, ब्रिटेन और ऑस्ट्रिया-हंगरी ने जर्मनी के ओटो वॉन बिस्मार्क से मध्यस्थता करने का अनुरोध किया। बिस्मार्क, जो उस समय जर्मन सम्राट की ओर से चांसलर थे, ने यूरोप में शक्ति संतुलन बनाए रखने के उद्देश्य से इस कांग्रेस का आयोजन किया।

कांग्रेस के मुख्य कारण इस प्रकार थे:

1. सान-स्टीफानो संधि को संशोधित करना: रूस को मिले विशेषाधिकार और प्रभाव को सीमित करना।

2. ओटोमन साम्राज्य की स्थिति को सुरक्षित बनाना: यूरोप के शक्तियों को तुर्की को पूरी तरह खत्म होने से रोकना।

3. बाल्कन क्षेत्रों के पुनर्गठन: नए स्वतंत्र राज्यों की स्थिति तय करना।

4. यूरोप में शक्ति संतुलन बनाए रखना: रूस, ब्रिटेन और ऑस्ट्रिया-हंगरी के बीच संतुलन तलाशना।

कांग्रेस में कौन-कौन शामिल थे?

बर्लिन कांग्रेस में प्रमुख रूप से ये देश सम्मिलित थे:

A. रूस
B. ब्रिटेन
C. ऑस्ट्रिया-हंगरी
D. जर्मनी
E. फ्रांस
F. इटली

ओटोमन साम्राज्य

इसके अलावा चार बाल्कन राज्यों (ग्रीस, सर्बिया, रोमानिया और मोंटेनेग्रो) के प्रतिनिधि भी उपस्थित थे, लेकिन वे महाशक्तियों जैसे निर्णय करने वाले पक्ष नही थे।

कांग्रेस में ओटो वॉन बिस्मार्क की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण रही। वे मध्यस्थ और अध्यक्ष के रूप में कार्य कर रहे थे और कांग्रेस का निर्देशन उन्होंने ही किया।

बर्लिन कांग्रेस के मुख्य मुद्दे और बहस

कांग्रेस का मुख्य लक्ष्य सान-स्टीफानो संधि में संशोधन करना था। इसके लिए कई मुद्दों पर बहस हुई।

बाल्कन क्षेत्र का विभाजन

सान-स्टीफानो में प्रस्तावित बड़ा बुल्गारिया रूस-अनुकूल राज्य का बड़ा हिस्सा था। बर्लिन कांग्रेस ने इसे तीन भागों में विभाजित किया:

1. उत्तर बुल्गारिया (Princely Bulgaria): ऑटोमन साम्राज्य के अधीन स्वायत्त परंतु रुसी प्रभाव वाला।

2. ईस्टर्न रूमेलिया: तुर्की नियंत्रण में स्वायत्त प्रशासन वाला क्षेत्र।

3. दक्षिण बुल्गारिया के अन्य हिस्से: सीधे तुर्की नियंत्रण में रहेंगे।

इस तरह, रूस की शक्ति को सीमित करते हुए बुल्गारिया को छोटे भागों में विभाजित किया गया।

स्वतंत्र राज्यों की मान्यता

बर्लिन कांग्रेस ने निम्नलिखित देशों की स्वतंत्रता को औपचारिक रूप से मान्यता दी:

1. रोमानिया
2. सर्बिया
3. मोंटेनेग्रो

ये वे राज्य थे जो लंबे समय से रूस-तुर्की युद्ध में तुर्की से अलग स्वतंत्र रूप से काम कर रहे थे।

बोस्निया और हर्जेगोविना का कब्जा

ऑस्ट्रिया-हंगरी को बोस्निया और हेर्जेगोविना पर कब्जा करने का अधिकार दिया गया, हालांकि यह क्षेत्र औपचारिक रूप से आज भी ओटोमन साम्राज्य का माना गया। यह निर्णय ऑस्ट्रिया-हंगरी की शक्ति को बढ़ावा देने वाला था।

साइप्रस का अधिग्रहण

ब्रिटेन ने तुर्की से साइप्रस को औपचारिक रूप से कब्जा किया, जो बाद में ब्रिटिश उपनिवेश में बदल गया।

उत्तरी बुल्गारिया की स्थिति

उत्तर बुल्गारिया को एक स्वायत्त प्रिंसली राज्य घोषित किया गया, लेकिन वह औपचारिक रूप से ओटोमन साम्राज्य के अधीन ही था।

बर्लिन संधि (Treaty of Berlin, 1878)

बर्लिन कांग्रेस की अंतिम आधिकारिक कार्यवाही का रूप बर्लिन संधि, 1878 था, जो 13 जुलाई 1878 को हस्ताक्षरित हुई।

इस संधि ने सान-स्टीफानो के कई प्रावधानों को रद्द या संशोधित कर दिया, जिससे रूस के बड़े लाभ को सीमित किया गया और यूरोप में शक्ति संतुलन बहाल करने की कोशिश की गई।

प्रमुख निर्णयों का विस्तृत विश्लेषण

(i) रूस की स्थिति में कमी

सान-स्टीफानो में रूस को जो बड़े लाभ और प्रभुत्व मिल रहे थे, उन्हें बर्लिन संधि ने खारिज कर दिया। बुल्गारिया में रूस-अनुकूल अर्ध-स्वतंत्र राज्य को तोड़ा गया, जिससे रूस का प्रभाव कम हुआ।

(ii) ओटोमन साम्राज्य की स्थिति

ओटोमन साम्राज्य के यूरोपीय हिस्सों को सीमित रूप से रखा गया। हालांकि यह धीरे-धीरे कमजोर हुआ, लेकिन उसे पूरी तरह खत्म नहीं किया गया ताकि शक्ति संतुलन बनी रहे।

(iii) ऑस्ट्रिया-हंगरी का विस्तार

बोस्निया और हेर्जेगोविना पर कब्जा करके ऑस्ट्रिया-हंगरी ने अपने प्रभुत्व को बढ़ाया, जिससे दक्षिण-पूर्वी यूरोप में उसकी स्थिति मजबूत हुई।

(iv) ब्रिटेन की स्थिति

ब्रिटेन ने साइप्रस पर कब्जा करके भूमध्य सागर में अपने हितों को सुदृढ़ किया।

(v) बाल्कन में नए राज्यों की मान्यता

रोमानिया, सर्बिया और मोंटेनेग्रो की स्वतंत्रता मान्यता से बाल्कन में नए स्थिर राष्ट्रों का उदय हुआ।

बर्लिन कांग्रेस के परिणाम और प्रभाव

बर्लिन कांग्रेस ने यूरोप और विशेषकर बाल्कन क्षेत्र में बड़े राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक प्रभाव छोड़े:

(i) शक्ति संतुलन में बदलाव

बर्लिन संधि ने रूस की बढ़ती प्रभुत्ववादी नीति को सीमित किया और यूरोप में संतुलन स्थापित करने में मदद की।

(ii) राष्ट्रीयतावाद की जड़ें मजबूत हुईं

बाल्कन में छोटे राष्ट्रों की स्वीकृति और विभाजन से स्थानीय राष्ट्रीयतावादी भावनाएँ और तेज़ हुईं। यह आगे चलकर बाल्कन युद्धों और अंततः पहली विश्व युद्ध जैसी घटनाओं की पृष्ठभूमि बने।

(iii) ओटोमन साम्राज्य की गिरावट

ओटोमन साम्राज्य अर्ध-स्वतंत्र शक्ति के रूप में यूरोप में रहा, लेकिन उसकी शक्ति लगातार घटती रही।

(iv) यूरोप में तनाव बढ़ा

बर्लिन संधि के निर्णयों से रूस और अन्य देशों के बीच तनाव बढ़ा, जिससे भविष्य में यूरोप में तनाव और संघर्ष की स्थिति बनी।

आलोचना और लंबी अवधि के प्रभाव

बर्लिन कांग्रेस की आलोचना कई विद्वानों और इतिहासकारों ने की है क्योंकि:

यह छोटे राज्यों और उनकी जनता की आकांक्षाओं को नजरअंदाज करता था।

निर्णय केवल महाशक्तियों के हितों पर आधारित थे।

यह बाल्कन में अस्थिरता का कारण बना, जिससे बाद में अन्य संघर्षों का मार्ग प्रशस्त हुआ।

निष्कर्ष

1878 की बर्लिन कांग्रेस इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ थी। इसने सान-स्टीफानो संधि को संशोधित करते हुए यूरोप में शक्ति संतुलन को स्थिर करने की कोशिश की, लेकिन स्थानीय राष्ट्रों और लोगों के हितों को ध्यान में नहीं रखा। इसके परिणाम आज भी यूरोपीय इतिहास के अध्ययन में गहरे प्रभाव छोड़ते हैं।